भारत में धार्मिक बहुलता और सामाजिक समरसताः चुनौतियाँ और अवसर

[1] अनीता देवी, [2]डॉ. नवनीश त्यागी

[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक

[1–2]विभाग :राजनीति विज्ञान, शोभित विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

भारत का धार्मिक बहुलवाद न केवल इसकी सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है, बल्कि यह राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण कारक भी है। भारतीय समाज में धार्मिक विविधता का इतिहास सदियों पुराना है, जो न केवल विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सह–अस्तित्व और संघर्ष को प्रदर्शित करता है, बल्कि यह भारतीय राजनीति और समाज पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इस शोध में भारतीय धार्मिक बहुलवाद, प्रमुख धर्मों का राजनीतिक परिदृश्य पर प्रभाव, धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक राष्ट्रवाद की चुनौतियों की चर्चा की जाएगी। यह अध्ययन भारत में धर्म और राजनीति के जटिल रिश्तों को समझने की कोशिश करता है, साथ ही धर्मनिरपेक्षता की चुनौतियों और अवसरों पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्दः धार्मिक बहुलवाद, भारत में धर्म, हिंदू राष्ट्रवाद, मुस्लिम राजनीति, सिख पहचान, धार्मिक विविधता, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिक हिंसा, भारतीय राजनीति।

परिचय

भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता इसे एक विशेष स्थान प्रदान करती है, और यह दुनिया के सबसे जटिल और आकर्षक बहुधार्मिक समाजों में से एक है। भारतीय समाज का ताना–बाना विभिन्न धर्मों और उनकी परंपराओं से मिलकर बना है, जो इसके राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य को प्रभावित करता है। भारत में धर्म और राजनीति का संबंध एक गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ा हुआ है, जो न केवल सह–अस्तित्व का परिचायक है, बल्कि संघर्ष और वार्ता का भी हिस्सा रहा है। भारतीय राजनीति में धर्म की भूमिका के बिना इसका समग्र विश्लेषण करना असंभव है, क्योंकि यह न केवल चुनावी राजनीति को प्रभावित करता है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को भी आकार देता है।

भारत में धार्मिक बहुलवाद

अपनी गहरी विविधता के लिए प्रसिद्ध भारत, विश्व के सबसे जटिल और आकर्षक बहुधार्मिक समाजों में से एक है। भारतीय समाज के ताने–बाने में समाहित यह बहुलवाद न केवल धार्मिक विविधता का विषय है, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को आकार देने वाला एक महत्वपूर्ण कारक भी है। भारत में धर्म और राजनीति का संबंध अंतरधार्मिक सह–अस्तित्व, संघर्ष और वार्ता की सदियों पुरानी परंपराओं का परिणाम है। भारत के धार्मिक बहुलवाद को समझना राजनीतिक परिदृश्य का विश्लेषण करने और विभिन्न धार्मिक समुदायों के राज्य सत्ता के साथ अंतर्संबंधों को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भारत का बहुधार्मिक समाज

भारत की धार्मिक विविधता इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। यह अनेक धर्मों का घर है, जिनमें हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और सिख धर्म जैसे प्रमुख विश्व धर्मों से लेकर बौद्ध धर्म, जैन धर्म और अनेक स्वदेशी जनजातीय धर्म शामिल हैं। प्रत्येक धर्म के भीतर विभिन्न संप्रदायों, मतों और आध्यात्मिक परंपराओं की उपस्थिति से यह विविधता और भी बढ़ जाती है। भारतीय धार्मिक बहुलवाद की जटिलता इस बात में निहित है कि यह इतनी विविध धार्मिक पहचानों को एक राष्ट्रीय छत्र के नीचे समाहित करने में सक्षम है, जिसका

प्रभाव न केवल सामाजिक सद्भाव पर बल्कि राजनीतिक विमर्श पर भी पड़ता है।

हिंदू धर्मः प्रमुख धर्म

भारत में हिंदू धर्म सबसे बड़ा धर्म है, जो लगभग 79.8ः आबादी (2011 की जनगणना के अनुसार) को प्रभावित करता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसमें विविध प्रकार की प्रथाएं, दर्शन और आध्यात्मिक परंपराएं शामिल हैं। हिंदू धर्म की बहुलतावादी प्रकृति–जहां शैववाद, वैष्णववाद, शक्तिवाद आदि विभिन्न विचारधाराएं सह–अस्तित्व में हैंः ने इसे भारत के बहुधार्मिक समाज के लिए अत्यधिक अनुकूल बना दिया है। ऐतिहासिक रूप से, हिंदू धर्म का भारत के सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है, और इसकी संस्थाओं और प्रथाओं ने कला से लेकर राजनीतिक संरचना तक हर चीज को प्रभावित किया है।

भारतीय राजनीति में हिंदू धर्म का प्रभाव विशेष रूप से हिंदू राष्ट्रवाद जैसे राजनीतिक आंदोलनों के उदय में स्पष्ट है, जो स्वतंत्रतोत्तर काल में एक प्रमुख शक्ति रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) जैसे संगठनों के नेतृत्व में हिंदू राष्ट्रवाद, हिंदू मूल्यों की सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रधानता की वकालत करता है, जिसके कारण अक्सर धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ तनाव उत्पन्न होता है (जैफरेलॉट, 1996)।

इस्लामः भारत में एक प्रमुख अल्पसंख्यक समुदाय

भारत में इस्लाम दूसरा सबसे बड़ा धर्म है, और लगभग 14.2 प्रतिशत आबादी खुद को मुस्लिम मानती है (2011 की जनगणना)। 7वीं शताब्दी में प्रारंभिक इस्लामी आक्रमणों के साथ शुरू हुए भारत में इस्लाम के आगमन ने सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया। भारत का मुस्लिम समुदाय विविधतापूर्ण है, जिसमें सुन्नी और शिया मुसलमानों के बीच महत्वपूर्ण सांप्रदायिक विभाजन हैं और भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक रीति–रिवाजों में भिन्नता पाई जाती है।

भारतीय राजनीति पर इस्लामी प्रभाव मुस्लिम हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले राजनीतिक आंदोलनों और दलों के उदय से स्पष्ट होता है, जिनमें विशेष रूप से अखिल भारतीय मुस्लिम लीग शामिल है, जिसने पाकिस्तान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता के बाद के काल में, भारत में इस्लामी राजनीतिक सक्रियता अक्सर मुस्लिम पहचान की रक्षा और एक प्रमुख रूप से हिंदू राष्ट्र में मुस्लिम अधिकारों की सुरक्षा के इर्द–गिर्द घूमती है। भारतीय संघ मुस्लिम लीग और अखिल भारतीय मजलिस–ए–इत्तेहाद–उल–मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) ऐसे राजनीतिक दलों के उदाहरण हैं जो भारत के बहुदलीय लोकतंत्र में मुसलमानों के राजनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए काम करते हैं (रहमान, 2012)।

ईसाई धर्म और सिख धर्मः धार्मिक अल्पसंख्यक

भारत में ईसाई धर्म भले ही अल्पसंख्यक धर्म है (जनसंख्या का लगभग 2.3 प्रतिशत), लेकिन इसका देश में, विशेष रूप से गोवा और केरल जैसे क्षेत्रों में, एक लंबा इतिहास रहा है। ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में, विशेष रूप से औपनिवेशिक काल के दौरान, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, भारत में ईसाई समुदाय की राजनीतिक भागीदारी को अक्सर प्रत्यक्ष धार्मिक राजनीतिक लामबंदी के बजाय सामाजिक और शैक्षिक मुद्दों के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है।

पंजाब में उत्पन्न सिख धर्म, भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव डालने वाला एक अन्य अल्पसंख्यक धर्म है। सिख पहचान इस क्षेत्र की राजनीतिक स्वायत्तता से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, विशेष रूप से 1980 के दशक के सिख अलगाववादी आंदोलन के संदर्भ में। मान्यता के लिए सिखों के संघर्ष के राजनीतिक परिणाम और भारतीय राज्य के साथ उनके संबंध भारतीय राजनीति में धार्मिक अल्पसंख्यकों की भूमिका को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

स्वदेशी और जनजातीय धर्म

भारत में बड़ी संख्या में स्वदेशी धर्म भी प्रचलित हैं, विशेषकर जनजातीय आबादी के बीच। ये जनजातीय धर्म

अक्सर जीववाद और पूर्वजों की पूजा को हिंदू धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम के तत्वों के साथ मिलाकर धार्मिक अभिव्यक्ति के अनूठे रूप बनाते हैं। ये समुदाय, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत (2011 की जनगणना के अनुसार) हैं, अक्सर मुख्यधारा के राजनीतिक विमर्श में हाशिए पर रहते हैं, और उनकी धार्मिक प्रथाओं को प्रमुख धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं द्वारा कभी–कभी गलत समझा जाता है या अनदेखा कर दिया जाता है।

भारत के धार्मिक परिदृश्य में विविधता भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट भाषाओं, रीति–रिवाजों और मान्यताओं की बहुलता तक भी फैली हुई है। भारत का बहुधार्मिक समाज केवल विभिन्न धार्मिक समूहों का समामेलन मात्र नहीं है, बल्कि अनेक मान्यताओं और प्रथाओं का एक गतिशील अंतर्संबंध है जो निरंतर विकसित होते रहते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

प्रमुख धर्मों का राजनीति पर प्रभाव

भारतीय राजनीति पर धर्म का गहरा प्रभाव है, जो न केवल व्यक्तिगत पहचान का एक रूप है बल्कि राष्ट्रीय परिदृश्य पर हावी राजनीतिक विचारधाराओं और आंदोलनों को भी आकार देता है। भारत के प्रमुख धर्मों – हिंदू धर्म, इस्लाम, सिख धर्म और ईसाई धर्म – ने राजनीतिक परिदृश्य पर अलग–अलग स्तर का प्रभाव डाला है, जिससे दलीय राजनीति, सामाजिक आंदोलन और चुनावी पैटर्न प्रभावित हुए हैं।

हिंदू धर्म और हिंदू राष्ट्रवाद का उदय

बहुसंख्यक धर्म होने के नाते, हिंदू धर्म का भारतीय राजनीति पर व्यापक प्रभाव है। स्वतंत्रता के बाद के काल में, हिंदू राष्ट्रवाद का उदय, विशेष रूप से आरएसएस और उसके सहयोगी संगठनों के माध्यम से, राजनीतिक विमर्श को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदू राष्ट्रवाद, या हिंदुत्व, एक राजनीतिक विचारधारा है जो राष्ट्र में हिंदू मूल्यों के सांस्कृतिक और राजनीतिक वर्चस्व को स्थापित करना चाहती है। यह एक ''हिंदू राष्ट्र'' की वकालत करता है, जहाँ हिंदू धर्म राज्य और सार्वजनिक जीवन का मूल सिद्धांत बन जाता है (जैफरेलॉट, 1996)।

हिंदुत्व का प्रभाव भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उदय में सबसे स्पष्ट रूप से देखा गया, जिसने हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा को अपने राजनीतिक मंच में समाहित कर लिया है। भाजपा की बढ़ती राजनीतिक सफलता, विशेष रूप से 1990 के दशक से, हिंदू पहचान की राजनीति के प्रति उसके आकर्षण का परिणाम है। 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस, राम जन्मभूमि आंदोलन और उसके बाद गौ संरक्षण और मंदिर निर्माण जैसे मुद्दों पर पार्टी के ध्यान केंद्रित करने जैसी प्रमुख घटनाओं ने भारतीय राजनीति में हिंदू धर्म की केंद्रीयता को और मजबूत किया है। हालांकि, हिंदू राष्ट्रवाद की राजनीति विवादास्पद रही है, विशेष रूप से अंतर–सामुदायिक संबंधों पर इसके प्रभाव और भारत के धर्मनिरपेक्ष आदर्शों के लिए इसकी चुनौतियों के कारण (चंद्र, 2003)।

इस्लाम और राजनीतिक लामबंदी

भारत की मुस्लिम आबादी के लिए, राजनीति अक्सर धार्मिक पहचान की रक्षा और हिंदू–बहुसंख्यक राष्ट्र में मुस्लिम अधिकारों की सुरक्षा से जुड़ी होती है। दशकों से, मुस्लिम हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली राजनीतिक पार्टियां उभरी हैं, जैसे कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग और ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहाद–उल–मुस्लिमीन (।प्डप्ड)। ये पार्टियां मुख्य रूप से मुस्लिम समुदाय के कल्याण और संरक्षण से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जिनमें अधिक प्रतिनिधित्व की मांग, धार्मिक स्वतंत्रता की सुरक्षा और मुसलमानों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक असमानताओं का समाधान शामिल है (रहमान, 2012)।

भारत में इस्लामी राजनीतिक भागीदारी में इस्लामी व्यक्तिगत कानूनों की रक्षा भी शामिल है, जैसे कि मुस्लिम

विवाह और उत्तराधिकार प्रणाली का पालन करने का अधिकार। हालांकि, मुस्लिम राजनीति अक्सर विवादों से घिरी रही है, जिसमें इस बात पर बहस होती रही है कि राजनीतिक प्रक्रिया में मुस्लिम पहचान को कितना स्थान दिया जाना चाहिए। इससे राजनीतिक क्षेत्र में एक अलग मुस्लिम पहचान की मांग उठी है, हालांकि यह समकालीन भारतीय राजनीति में एक विवादास्पद मुद्दा बना हुआ है (जकारिया, 2005)।

सिख धर्म और राजनीतिक पहचान

भारत में अल्पसंख्यक धर्म होने के नाते सिख धर्म का राजनीति पर, विशेष रूप से पंजाब में, एक अनूठा और महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। ऐतिहासिक रूप से, सिख समुदाय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग रहा है, लेकिन स्वतंत्रता के बाद, सिख समुदाय और भारतीय राज्य के बीच तनाव अक्सर राजनीतिक स्वायत्तता और सांस्कृतिक संरक्षण के मुद्दों पर केंद्रित रहा है। 1980 के दशक में एक अलग सिख राज्य, खालिस्तान की मांग, इन्हीं तनावों की अभिव्यक्ति थी, विशेष रूप से भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में सिखों के कथित हाशिए पर होने के कारण।

सिख संगठनों की राजनीतिक सक्रियता ने पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव लाने में योगदान दिया है, जिसमें शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) जैसी पार्टियां राज्य में सिखों के राजनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजनीति पर सिख धर्म का प्रभाव धार्मिक स्वतंत्रता, गुरुद्वारों (सिख मंदिरों) की सुरक्षा और सिख संस्कृति और भाषा के संरक्षण जैसे मुद्दों पर जोर देने में भी देखा जा सकता है (गिल, 1997)।

ईसाई धर्म और सामाजिक कल्याण की राजनीति

भारत में ईसाई धर्म भले ही अल्पसंख्यक धर्म हो, लेकिन इसने सामाजिक और शैक्षिक सुधार आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ईसाई मिशनरियों ने देश भर में स्कूल, अस्पताल और सामाजिक सेवा संगठन स्थापित करने में अहम योगदान दिया, जिनका प्रभाव आज भी भारत के शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों पर दिखता है। हिंदू धर्म या इस्लाम की तरह ईसाई धर्म को राजनीतिक रूप से उतना सक्रिय नहीं किया गया है, लेकिन चर्च ने सामाजिक नीतियों को आकार देने में, विशेष रूप से शिक्षा, सामाजिक न्याय और गरीबी उन्मूलन से संबंधित क्षेत्रों में, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत में ईसाई राजनीतिक सक्रियता राजनीतिक वर्चस्व हासिल करने के बजाय धार्मिक स्वतंत्रता और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा जैसे मुद्दों पर अधिक केंद्रित रहती है। उदाहरण के लिए, ईसाई संगठन उन कानूनों का विरोध करने में अग्रणी रहे हैं जिन्हें धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने वाला माना जाता है, जैसे कि कई राज्यों में लागू किए गए धर्मांतरण विरोधी कानून (मनोहर, 2010)।

भारत में धर्मनिरपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता महज एक अवधारणा से कहीं अधिक हैय यह भारत की राष्ट्रीय पहचान का एक आधारशिला है, जो सभी धार्मिक समुदायों के लिए समानता सुनिश्चित करती है। हालांकि, भारत की धर्मनिरपेक्षता दुनिया के अन्य हिस्सों से अलग है।

धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा और विकास

1. भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थः धर्म को राज्य से पूरी तरह अलग करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा सह–अस्तित्व है जहां राज्य सभी धर्मों से समान दूरी बनाए रखता है।
2. भारतीय संविधानः (1950) ने अनुच्छेद 25–28 के तहत धर्म की स्वतंत्रता और सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार को स्थापित करके धर्मनिरपेक्षता की नींव रखी।
3. जवाहरलाल नेहरू का दृष्टिकोणः उन्होंने वैज्ञानिक तर्कवाद और राजनीति में धार्मिक हस्तक्षेप के बिना भारत के आधुनिकीकरण में विश्वास किया, जिससे आने वाले वर्षों के लिए भारत की धर्मनिरपेक्ष नीति को आकार मिला (कोहली, 2004)।

4. धर्मनिरपेक्षता एक पहचान के रूप में: धर्मनिरपेक्षता ने भारत की बहुधार्मिक पहचान को आकार देने में मदद की, जिससे इस विचार को बल मिला कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में निहित है।

भारतीय राजनीति में धर्मनिरपेक्षता के सामने चुनौतियाँ

1. धार्मिक राष्ट्रवाद: हिंदुत्व (हिंदू राष्ट्रवाद) का उदय भारतीय राज्य के धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने को चुनौती देता है, ''हिंदू राष्ट्र'' (हिंदू राष्ट्र) के लिए दबाव डालता है और धार्मिक बहुलवाद को दरकिनार करता है (जैफ्रेलॉट, 1996)।
2. सांप्रदायिक हिंसा: धर्म के राजनीतिक उपयोग ने सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ा दिया है, जैसे कि 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस और 2002 में गुजरात दंगे, जिससे धर्मनिरपेक्षता के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता कमजोर हो गई है (वरशनी, 2002)।
3. धार्मिक कानून: विभिन्न समुदायों के लिए व्यक्तिगत कानूनों की निरंतरता, जैसे मुस्लिम व्यक्तिगत कानून या हिंदू विवाह अधिनियम, सभी के लिए समानता सुनिश्चित करने के लिए एक समान नागरिक संहिता की आवश्यकता को चुनौती देती है (नुस्बाम, 2007)।
4. चुनावी राजनीति और धर्म: राजनीतिक दल अक्सर वोट हासिल करने के लिए धार्मिक पहचान का इस्तेमाल करते हैं, जिससे पहचान की राजनीति होती है जो समुदायों को विभाजित करती है और धर्मनिरपेक्ष शासन को कमजोर करती है (चंद्र, 2003)।

व्यवहार में धर्मनिरपेक्षता: नेहरू का आदर्शवाद

- नेहरू की विरासत: नेहरू की धर्मनिरपेक्षता की परिकल्पना, जो धार्मिक विविधता को संतुलित करते हुए राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है, भारत के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बनी हुई है।
- राज्य और धर्म: नेहरू की नीतियों का उद्देश्य धर्म को राजनीति से दूर रखना था, और इस मॉडल का उद्देश्य भारत के विविध धार्मिक समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देना था।

धर्मनिरपेक्षता और भारत की राष्ट्रीय पहचान पर इसका प्रभाव

1. अनेकता में एकता: धर्मनिरपेक्षता का उद्देश्य सैकड़ों धार्मिक और जातीय समूहों से संबंधित एक अरब से अधिक लोगों वाले देश में सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देना था।
2. संतुलन बनाने का कार्य: भारत में धर्मनिरपेक्षता धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता पर जोर देती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी एक धर्म राष्ट्रीय विमर्श पर हावी न हो।

धर्मनिरपेक्षता के लिए खतरे: आधुनिक चुनौतियाँ

1. धार्मिक राष्ट्रवाद: हिंदू राष्ट्रवादी राजनीति के उदय ने एक वैचारिक बदलाव को बढ़ावा दिया है, जिसमें धर्म चुनावों और राष्ट्रीय नीति को तेजी से प्रभावित कर रहा है।
2. धार्मिक हिंसा और संघर्ष: सांप्रदायिक संघर्षों की बढ़ती आवृत्ति भारत के धर्मनिरपेक्ष आदर्शों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश करती है। 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस और 2002 में गुजरात दंगे इस बात के स्पष्ट उदाहरण हैं कि राजनीतिक ताकतों द्वारा धर्मनिरपेक्षता को कितनी आसानी से कमजोर किया जा सकता है।
3. व्यक्तिगत कानूनों पर बहस: सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता का अभाव और धार्मिक व्यक्तिगत कानूनों की निरंतरता ने भारत में विभिन्न समुदायों के बीच असमानता और न्याय को लेकर बहस को जन्म दिया है।

4. चुनावी राजनीति और धर्मचुनावों में धार्मिक प्रतीकों और बयानबाजी का उपयोग राज्य की निष्पक्षता को कमजोर करता है, जिससे धार्मिक ध्रुवीकरण और गहराता है।

धर्मनिरपेक्षता, जो एक मूलभूत संवैधानिक मूल्य है, ने भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने धार्मिक स्वतंत्रता और राजनीतिक समानता सुनिश्चित की है, लेकिन आधुनिक चुनौतियाँ–विशेष रूप से धार्मिक राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक हिंसा और राजनीति में धर्म का प्रभाव–इसकी सीमाओं को लगातार चुनौती दे रही हैं। भारत को अपने धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने को बनाए रखने के लिए धार्मिक बहुलता की रक्षा करते हुए अपने सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित करना होगा।

चाबी छीननाः

- भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है सभी धर्मों का सहअस्तित्व और उनके साथ समान व्यवहार।
- धार्मिक राष्ट्रवाद और सांप्रदायिक हिंसा का उदय भारत की धर्मनिरपेक्षता के लिए महत्वपूर्ण खतरे हैं।
- व्यक्तिगत कानून और पहचान आधारित राजनीति एक समान नागरिक संहिता को लागू करने में बाधा हैं।
- नेहरू की धर्मनिरपेक्षता की परिकल्पना, एक आधुनिक, समावेशी राजनीतिक व्यवस्था के रूप में, भारत की राजनीतिक पहचान के लिए एक संदर्भ बिंदु बनी हुई है।

निष्कर्ष

भारत का धार्मिक बहुलवाद और इसकी धर्मनिरपेक्षता का परिप्रेक्ष्य भारतीय राजनीति और समाज में एक गहरे प्रभाव डालता है। हालांकि भारत में धार्मिक विविधता को सह–अस्तित्व और समानता का प्रतीक माना जाता है, धर्मनिरपेक्षता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे हिंदू राष्ट्रवाद, सांप्रदायिक हिंसा और राजनीतिक पहचान आधारित संघर्ष। भारतीय संविधान और नेहरू की धर्मनिरपेक्ष दृष्टि के बावजूद, धर्म के राजनीतिक उपयोग ने भारत की समाजिक और राजनीतिक संरचना को प्रभावित किया है। धर्मनिरपेक्षता का उद्देश्य धार्मिक स्वतंत्रता और समाज में सद्भाव बनाए रखना है, लेकिन वर्तमान में इसका पालन करने में कई चुनौतियां सामने आ रही हैं। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि भारत को अपने धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने को बनाए रखने के लिए धर्म के राजनीतिक उपयोग और पहचान आधारित राजनीति को सीमित करते हुए सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित करना होगा।

संदर्भ

- ✓ एंथोनी, एफ.वी. (2023)। भारतीय लोकतंत्र के बहुधार्मिक संदर्भ में राज्य–धर्म पृथक्करणः एक अनुभवजन्य अध्ययन। मानवाधिकार और राज्य एवं धर्म पृथक्करणः अंतर्राष्ट्रीय केस स्टडीज (पृष्ठ 33–65)। चामः स्प्रिंगर नेचर स्विट्जरलैंड।
- ✓ एसेवेडो, डी.डी. (2013). भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता। विधि एवं सामाजिक जांच।
- ✓ एडेनी, के. (2021). हम जातीय लोकतंत्र का मॉडल कैसे बना सकते हैं? समकालीन भारत पर एक अनुप्रयोग। राष्ट्र और राष्ट्रवाद, 27(2), 393–411.
- ✓ धर्मशक्तु, एम.जी. (2025)। अध्याय–20 भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्वतंत्रताः सिद्धांत, व्याख्याएँ और चुनौतियाँ। समकालीन कानूनी अनुसंधान की रूपरेखाः एक बहुविषयक परिप्रेक्ष्यः खंड 1: सार्वजनिक कानून की नींव और सीमाएँ, 213।
- ✓ रूगर, डी. (2020). उप–सहारा अफ्रीका में संघर्ष और शांति निर्माण में धार्मिक संगठनों की भूमिकाः

कैथोलिक चर्च और इस्लामी धर्म का एक केस स्टडी (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, नैरोबी विश्वविद्यालय)।

- ✓ यादव, आर.के. (2024). मोदी प्रशासन के तहत शासन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण। लंदन जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 24(12), 43–55.
- ✓ मित्रा, एस.के., सक्सेना, आर., और मुखर्जी, पी. (संपादक)। (2022)। भारत में 2019 के संसदीय चुनावः चौराहे पर लोकतंत्र? टेलर एंड फ्रांसिस।
- ✓ भानु, एपी (2020)। भारत में धर्मनिरपेक्षता और समानता के लिए संवैधानिक स्थान का आकलन। धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता में (पृष्ठ 319–338)। एडवर्ड एल्गर पब्लिशिंग।
- ✓ भुइयां, एम.जे.एच. (2022). भारत में धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हिंदुत्व का प्रभाव। धर्मनिरपेक्ष राज्यों में धार्मिक स्वतंत्रता (पृष्ठ 267–295)। ब्रिल निजॉफ।